International Journal of Humanities and Social Science Research
www.socialsciencejournal.in
ISSN: 2455-2070, Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 17-02-2021, Accepted: 04-03-2021, Published: 10-04-2021
Volume 7, Issue 2, 2021, Page No. 63-66

पन्ना टाइगर रिजर्व में विलुप्त प्रजाति गिद्ध प्रजनन स्थल के संरक्षण एवं प्रबन्धन का एकः भौगोलिक अध्ययन

महेश कुमार[1], डॉ. वी. के शर्मा[2]

[1] शोध छात्र भूगोल, शासकीय ठा. रणमत सिंह स्नातकोत्तर महाविद्यालय रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

[2] सहा0 प्राध्यापक, शासकीय ठा. रणमत सिंह स्नातकोत्तर महाविद्यालय रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

सारांश

विश्व भर में विभिन्न प्रजातियों की संख्या में लगातार कमी चली आ रही है, जो थमने का नाम नहीं ले रही है। इस प्रकार की भयावय स्थिति का मुख्य कारण पर्यावरणीय असंतुलन है। जिसका मुख्य पहलु सिर्फ हम स्वार्थी मानव हैं, जो दिन प्रतिदिन नवीन प्रद्यौगिकी की खोज तथा उसकी क्षमता बढ़ाने में लगा हुआ है। वही दूसरी ओर जो प्रकृति के अनुरूप सतत् विकास पर कल्पना तथा कार्य पूरे विश्व में संचारित करने पर जोर दे रहा है। परन्तु वही संकटापन्न की ओर पहुच रही अनेक प्रजातियों पर विशेष ध्यान ना के बराबर है। इस प्रकार भारत में अनेक प्रजातियाँ संकटापन्न की स्थिति पर पहुच चुकी है। जैसे– गौरैया, सफेद बगुला आदि के भी विलुप्ती के संकेत मिलने लगे है। वही ज्यादातर विलुप्त हो चुकी गिद्ध प्रजातियों की संख्या में लगभगग तीन दषक ऋणात्मक वृद्धि दर्ज हुई है। केन्द्रीय पर्यावरण व एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय की रिपोर्ट के अनुसार पूरे भारत में लगभगग तीस वर्शो में गिद्धों की अबादी चार करोड़ से कम हो कर मात्र 19 हजार रह गयी है। इसी प्रकार से मध्य प्रदेश के पन्ना राष्ट्रीय उद्यान में गिद्धों की लगभगग 8 प्रजातियां पायी गयी हैं। जो अध्ययन के मुताबिक इनकी संख्या में कमी वृद्धि देखने को मिल रही है। इस प्रकार की गिरावट का पता वर्ष 2011 के दशक में चला और वर्ष 2019 आते ही लगभगग 68 प्रतिशत गिद्धों की रेसिडेट जिप्स प्रजाति में भारी गिरावट प्राप्त हुई, अध्ययन के दौरान पन्ना रिजर्व में लगभग 55 गिद्ध सहवास स्थल तथा दो प्रजनन स्थल स्थापित मिले जिसमें एक PTR और दूसरा पवई में स्थापित है। जिसकी निगरानी देखभाल मध्य प्रदेश राज्य वन विभाग पन्ना रिजर्व द्वारा संरक्षण एवं प्रबन्धन के पुख्ता इंतजाम किये गये है, जो विहित कार्य संरक्षण एवं प्रबन्धन द्वारा संभव हो सकता है। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु प्रस्तुत अध्ययन ''पन्ना टाइगर रिजर्व में विलुप्त प्रजाति गिद्ध प्रजनन स्थल के संरक्षण एवं प्रबन्धन का एक : भौगोलिक अध्ययन'' किया गया है।

मूल शब्दः संकटापन्न, पर्यावरण, प्रजातियाँ, प्रौद्योगिकी असन्तुलन

प्रस्तावना

अध्ययन का उद्देश्य एवं परिकल्पना (Hypothesis of Study)

- पन्ना राष्ट्रीय उद्यान में संकटापन्न प्रजातियों को चिन्हित करना।
- राष्ट्रीय उद्यान में गिद्धों की प्रजाति तथा संख्या का आंकलन करना।
- राष्ट्रीय पार्क में संकटापन्न प्रजातियों के संरक्षण हेतु किये गये कार्यो का अध्ययन तथा नवीन सुझाव प्रदान करना।

शोध विधि तंत्र (work Methodology)

शोध क्षेत्र में शोधकर्ता भ्रमण के दौरान विभिन्न प्रकार के अवलोकन से प्राप्त तथ्यों तथा आंकड़ो का विश्लेष्ण करके निष्कर्ष पर पहुचने का कार्य किया तथा दूसरी ओर विभिन्न पत्र, पत्रिकाओं, पोस्टर तथा अन्य द्वितीय प्रकार के आंकड़ो का संकलन वर्ष 2011 से 2015 पन्ना रिजर्व कार्यालय द्वारा प्राप्त किया गया है

तलिका 1

व्यवस्थित दैव प्रतिचयन विधि (Systematic Randam Sampling)	
1. रिजर्व एरिया PTR	Long billed, , white backed, Egyptians
2. पर्वतीय केन घाटी क्षेत्र	Redheaded, Eurasian, Griffin, Himalayan Griffon, Cincous

शेध क्षेत्र (Study Aria): शोध क्षेत्र भारत के हृदय प्रदेश मध्य प्रदेश राज्य के बुन्देलखण्ड पठार के अन्तर्गत विश्व व्याख्यात हीरा उत्खनन् एवं प्राकृति वनस्पति तथा तंज गहरी घाटियों की सुशोभित प्राकृति छटा को संजोय हुए पन्ना जिले का पन्ना राष्ट्रीय उद्यान जिसकी स्थिति भौगोलिक दृष्टि से 24^0, 27′ से 24^0, 46′ उत्तरी अक्षांश तथा 79^0 45′ से 80^0, 09′ पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। तथा समुद्र तल से ऊचॉई 212–338 मीटर तथा पन्ना राष्ट्रीय उद्यान का क्षेत्रफल 542.67 किमी^{2} है। पन्ना रिर्जव क्षेत्र को तीन भागों में बाटकर अध्ययन किया गया है।

1. ऊपरी ताल गांव पठार
2. मध्य हिनौता पठार
3. घाटी क्षेत्र

छतरपुर जिले में केन घाटी की उभरती पहाड़ियों और पठारों की श्रृख्ला गिद्धों के पर्यावास (घोसला) बसेरा बनाने तथा प्रजजन की सुविधा प्रदान करने वाले क्षेत्र को भी इस अध्ययन में सम्मलित किया गया है।

भूमिका (Introduction)

प्राचीन काल से यह देखा गया है कि गिद्धों को मरे हुए मवेशियों का मांस कचरा खा कर साफ करने वाली प्रजाति मानी जाती रही है जो वातावरण को स्वच्छ रखने में अपनी विशेष भूमिका निभाते हैं। पन्ना राष्ट्रीय उद्यान में तीन दशक पहले गिद्धों की संख्या अधिक देखने को मिलती थी परन्तु वर्तमान में लगभग 81 प्रतिशत गिद्धों की आबादी में गिरावट हुई है। इसी प्रकार दक्षिण एशिया के भारत में गिद्ध पूर्व काल मे अधिक मात्रा में देखने को मिलते थे, परन्तु 1990 के दशक के बाद गिद्धों की संख्या में गिरावट दर्ज हुई है। वर्तमान में पन्ना रिजर्व क्षेत्र में गिद्धों की

अनेक प्रजातियाँ पायी गयी हैं। जिनके निवास स्थल अध्ययन के दौरान 55 घोसला मात्र प्राप्त हुए हैं। जिसमें च्ज्त क्षेत्र में सर्वाधिक गिद्ध प्राप्त हुए और पवई में इनकी संख्या काफी कम देखने को मिली, इन सभी आंकड़ों के विश्लेषण से यह प्रतीत होता है कि इस प्रजाति को अगर संरक्षण में विशेष ध्यान न दिया गया तो यह आने वाले कुछ वर्षो में पूर्णतः समाप्त हो जाएगी और मात्र यह प्रजाति कहानी बन कर इतिहास की किताबों में रह जाएगी।

विश्लेषण (Analysi)

पन्ना राष्ट्रीय उद्यान के अन्तर्गत गिद्धों की आबादी वाले क्षेत्रों में से च्ज्त और पवई छतरपुर वृत्त को सम्मिलित किया गया है यहां पर पर्यावास निवास करने वाली गिद्धों की अनेक प्रजातियाँा पायी गयी है और यह प्रजाति अपने स्थानीय क्षेत्र को विशेष तौर पर गन्दगी से मुक्त करने की महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है और अपने बच्चों का संरक्षण भी बड़ी सतकर्ता से करते हैं। अध्ययन के दौरान पाया गया है कि गिद्धों की अनेक प्रजातियाँ है जिनकी बनावट भी भिन्न देखने को मिली किसी की लम्बी चोंच तो किसी की गर्दन मोटी और सफेद एवं लाल रंग वाले गर्दन के अनेक प्रकार की प्रजातियों का होना माना गया है। परन्तु इनकी संख्या और प्रजाति का निर्धारण शोधकर्ता पन्ना रिजर्व क्षेत्र संचालक से गिद्ध गणना सम्बन्धी आंकड़ो को प्राप्त कर उनकी विश्लेषण किया गया तथा जिसमें अनेक तथ्य सामने आए जिनकों शोधकर्ताद्वारा परिणाम और परिचर्चा में विस्तृत अध्ययन करके एक नवीन विचार धारा का विकास पन्ना टाइगर में वन्यजीवो की पायी जाने वाली सकंटापन्न प्रजाति के लिए प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

तालिका 2: गिद्ध जनसंख्या विकास सुचकांक दर (वर्ष 2011 से 2015 एवं वर्ष 2019 तक)

क्र0 सं0	गिद्धों की प्रजाति	गिद्धों की संख्या PTR प्रतिशत में					गिद्धों की संख्या पवई छतरपुर	
		2011	2012	2013	2014	2015	2015	–
1	*Long billed*	72.0	35	53.8	53	70.34	26.3	
2	*White backed*	9.47	13	10.83	5.9	2.65	19.57	
3	*Egyption*	6.7	8.9	5.64	8.64	0.70	0.42	
4	*Red headed*	4.2	7.0	4.97	6.7	1.18	17.44	
5	*Eurasian Griffon*	3.2	21.0	4.75	6.8	8.21	29.36	
6	*Himalayan Griffon*	3.7	9.01	13.65	16.26	8.50	5.10	
7	*Cinerous*	0.4	0.05	0.44	0.10	0.05	1.70	
8	*Unidentified*	0	5.67	5.79	0.65	7.32	–	
9	*Perigreen Faloon*	–	–	–	1.86	1.00	–	
		18.90	25.35	19	12.84	20.93	100	

स्त्रोत– क्षेत्र संचालक पन्ना टाइगर रिजर्व पन्ना (म0प्र0)

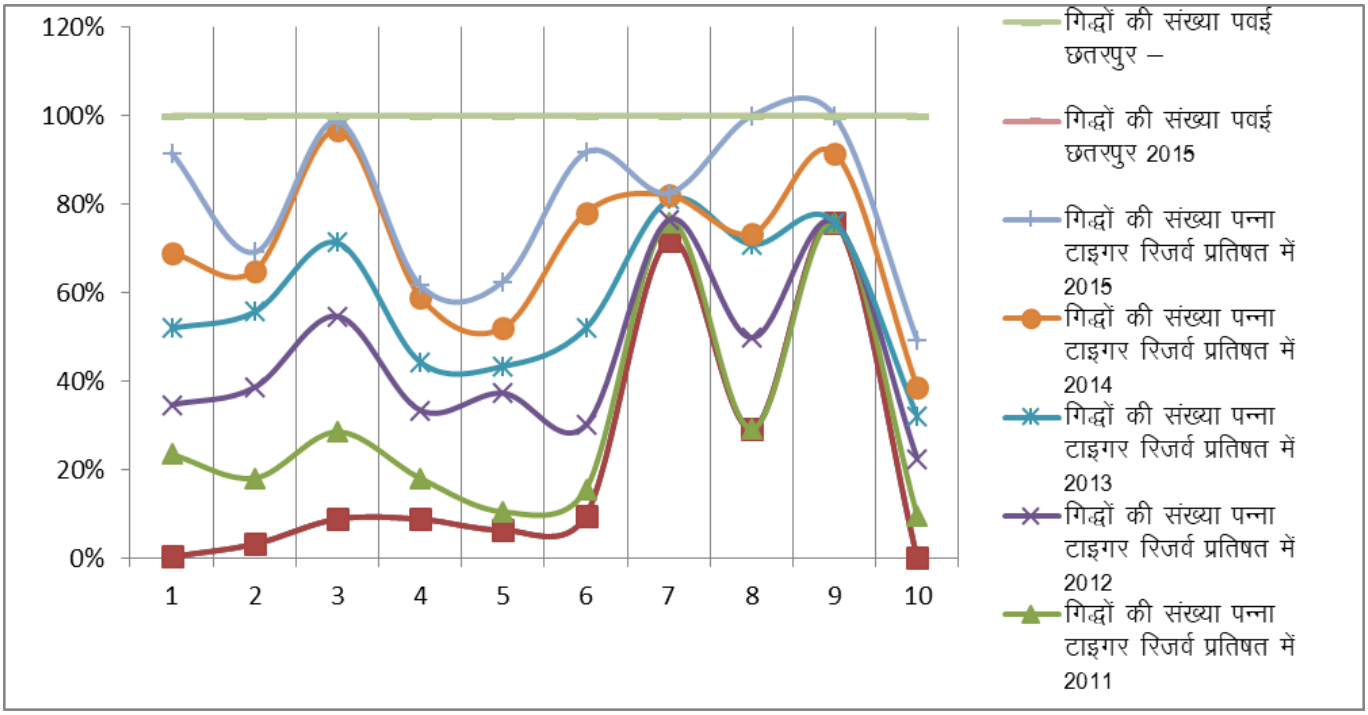

चित्र 1: गिद्ध जनसंख्या विकास सुचकांक दर (वर्ष 2011 से 2015 एवं वर्ष 2019 तक)

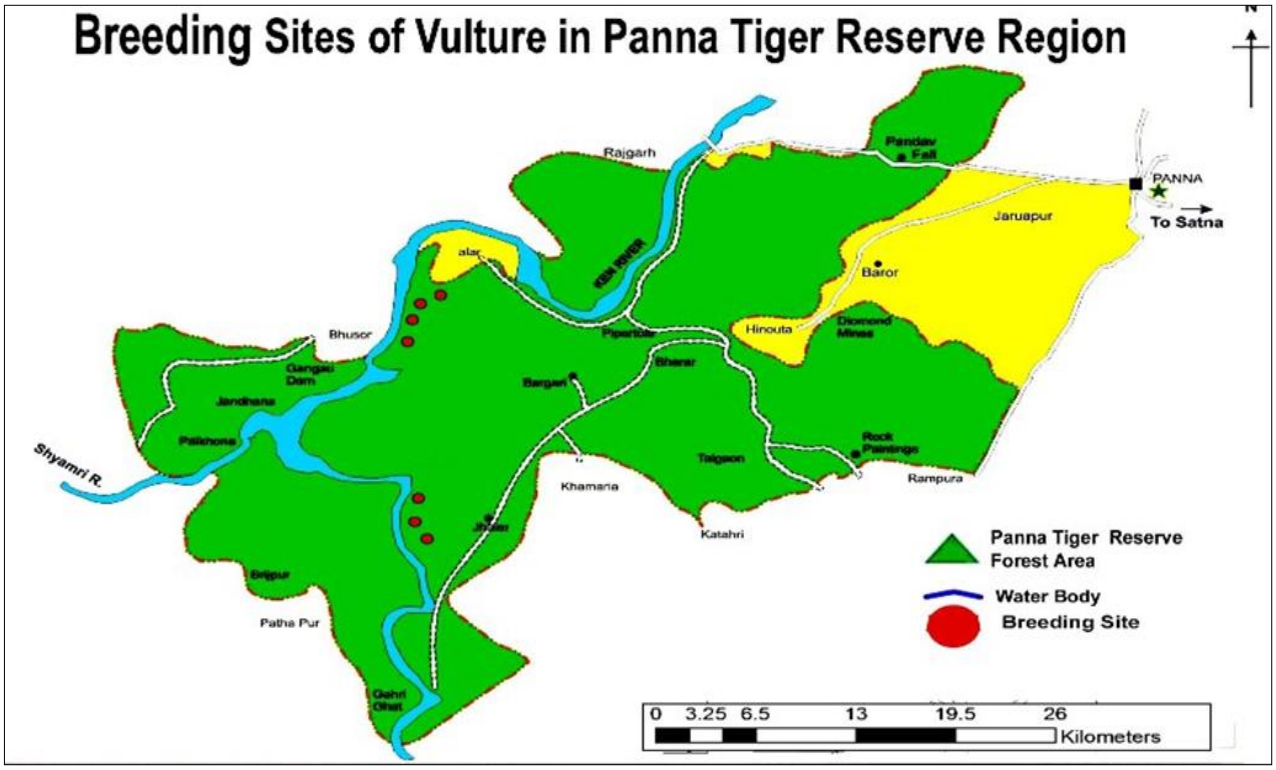

चित्र 2

तलिका 3: (गिद्धों का वार्षिक वृद्धि विकास दर)

क्र0 सं0	वर्ष	गिद्धों की जनसंख्या (प्रतिषत में)
1	2011	18.90
2	2012	25.35
3	2013	19.00
4	2014	12.84
5	2015	20.93

स्त्रोत– कार्यालय क्षेत्र संचालक, पन्ना टाइगर रिजर्व, पन्ना (म0प्र0)

तलिका 4: गिद्ध गणना गोशवारा शीट (वृत्त स्तर पर) वृत्त का नाम छतरपुर (वर्ष 2019)

वनमण्डल का नाम	गिद्ध आवास स्थलों की संख्या	गणना में पाये गये कुल गिद्धों की संख्या		
		अवस्यक	वयस्क	सम्पूर्ण योग
पन्ना टाइगर रिजर्व, पन्ना	55	55	574	629

स्त्रोत– कार्यालय क्षेत्र संचालक, पन्ना टाइगर रिजर्व, पन्ना (म0प्र0)

परिणाम परिचर्चा

अध्ययन के दौरान प्राप्त प्राथमिक एवं द्वितीयक आंकड़ो के विश्लेषण से ज्ञात हुआ कि पन्ना टाइगर रिजर्व क्षेत्र में सकंटापन्न प्रजातियों में टाइगर के अतिरिक्त गिद्धों की संख्या व अबादी में जो परिवर्तन हुए वह सोचनीय है और भविष्य में गिद्ध प्रजाति के पूर्ण विलुप्त होने के संकेत इस अध्ययन से हो रहे हैं। पन्ना रिजर्व क्षेत्र में गिद्धों की लगभग आठ प्रजातियाँ देखी गयी हैं जिनमें लम्बी चोच वाली प्रजाति की संख्या वर्ष 2011 में 72 प्रतिशत थी और वर्ष 2012 में घटकर 35 प्रतिशत तथा वर्ष 2013 में फिर वृद्धि कर 53 प्रतिशत पर पहुच गयी और वर्ष 2015 में 70.34 प्रतिशत जनसंख्या पन्ना च्ज् क्षेत्र में पायी गयी और 2015 में पवई मे इस प्रजाति की संख्या 26.3 प्रतिशत ही रही तथा सर्वाधिक कमी ब्यदमतवने प्रजाति में वर्ष 2011 से 2015 तक देखने को मिली और वर्ष 2019 में वन मण्डल पन्ना टाइगर रिजर्व एवं वृत्त छतरपुर को लेकर गिद्धों के आवास ग्रह मात्र 55 रह गये और अवयस्क गिद्धों की संख्या 55 तथा वयस्क गिद्धों की संख्या 574 रह गयी है जो कि वर्ष 2015 की अपेक्षा 67 प्रतिशत की कमी हुई है वर्तमान में सम्पूर्ण वन क्षेत्र मात्र 33 प्रतिशत ही गिद्धों की अवादी बची हुई है जो भविष्य में खतरे का संकेत कर रही हैं।

संरक्षण एवं प्रबन्धन हेतु सुझाव

- सरकार का प्रमुख लक्ष्य है कि संकटापन्न प्रजातियों को बचाने में किसी भी प्रयास की कठिनाई हो पर उसका ध्यानपूर्वक व्यवस्थित रूप से संरक्षण पर जोर दिया जाये।
- पन्ना रिजर्व क्षेत्र में गिद्धों की संख्या बढ़ाने के लिए कम से कम 5 प्रजनन केन्द्र स्थापित किए जाए और जो वर्तमान में दो प्रजनन केन्द्र हैं उनको अच्छे ढ़ग से संरक्षित किया जाए।
- पन्ना रिजर्व क्षेत्र में केन्द्रीय पर्यावरण मंत्रालय का सहयोगग लेकर राज्य वन विभाग गिद्धों एवं अन्य संकटापन्न प्रजातियों के सरंक्षण हेतु प्राकृतिक कारकों का विकास पर जोर दिया जाए।
- वर्ष 2008 से डाइक्लोफेनाक दवा पर प्रतिबन्ध होने के वाबजूद भी पशुचिकित्सा में प्रयोग अभी भी तेजी से जारी है जिसकी वजह से गिद्धों की वर्तमान में काफी मौतें हो रही हैं।

निष्कर्ष

भारत के सर्वाधिक वन क्षेत्र वाले राज्य मध्य प्रदेश के पन्ना टाइगर रिजर्व जो वन्य जीव के के लिए सर्वाधिक सुरक्षित क्षेत्र माना जाता है और पन्ना टाइगर रिजर्व वन विभाग के देख–रेख के वाबजूद भी गिद्धों की 67 प्रतिशत अवादी वर्ष 2015 के मुताबिक ऋणात्मक वृद्धि दर दर्ज हुयी, यह उपलब्धि पन्ना वन विभाग के लिए खतरे का संकेत दे रही है। पर्यावरण एवं उसके घटकों के प्रतिबद्धताओं के प्रति मध्य प्रदेश के पन्ना वन विभाग को गंभीर होने के लिए यह आंकडे संकेत दे रहे हैं। हो सकता है कि संख्या की कमी को देखते हुए गणना विधि के खामियों को

उजागर किया जाए। परन्तु इस संबंध में पन्ना राष्ट्रीय उद्यान की रिपोर्ट अध्ययन के दौरान अवलोकन निरीक्षण से बहुत हद तक संशय को कम करता है और यह गणना अध्ययन के सभी प्रमाणिकता की अभिपुष्टि भी करते हैं।

सन्दर्भ सूची

1. भूगोल और आप वर्ष–18, अंक–2 अगस्त 2019 पृ0सं0 41।
2. पन्ना टाइगर रिजर्व कार्यालय क्षेत्रीय वन मण्डल की रिपोर्ट वर्ष 2019।
3. आंकडो की परिधि में मध्य प्रदेश की वर्ष 2019 वन्य जीव संपदा 18–19।
4. पर्यावरण भूगोल एस0एम0 सक्सेना वर्ष पृ0सं0 457–459
5. गिद्ध गणना शीट (वृत्त स्तर पर) दिनांक 12.01.2019।
6. पन्ना टाइगर रिजर्व पन्ना गिद्ध गणना वर्ष 2011 से 2015